I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए ।

१. मुस्काते फूल को क्या आना चाहिए?

उत्तरः मुरझाना ।

२. मेघ में किस चीज़ की चाह होनी चाहिए ?

उत्तरः घुल जाने की ।

३. आँखों की सुंदरता किससे बढ़ती है?

उत्तरः आँसू रूपी मोती से ।

४. प्राणों की सार्थकता किसमें है?

उत्तरः बेसुध पीड़ा सहने में ।

५. कवयित्री को किसकी चाह नहीं है?

उत्तरः अमर लोक ।

६. कवयित्री किस अधिकार की बात कर रही हैं?

उत्तरः मिटने के अधिकार की बात कर रही हैं ।

७. परमात्मा की करुणा से कवयित्री को क्या मिला?

उत्तरः अमर लोक का उपहार मिला ।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

१. फूल एवं तारों के विषय में कवयित्री महादेवी वर्मा क्या कहती हैं?

उत्तरः इन पंक्तियों में कवयित्री फूल और तारों के बिंब के सहारे जीवन के प्रति गहरी आस्था व्यक्त करती हैं। कवयित्री मानती हैं कि जो सुंदर फूल खिलते हैं उन्हें मुरझाना भी पड़ता है । यही प्रकृति का नियम है । रात में चमकते टिम-टिमाते सितारे को भी भोर होते ही गायब होना है । यही सृष्टि का नियम है । इन फूल और तारों के सहारे कवयित्री हमें यह संदेश देना चाहती हैं कि मनुष्य को भी अपने जीवन में त्यागने का गुण अपनाना चाहिए और दूसरों के जीवन को खुशी से भरने की चाह रखनी चाहिए ।

२. बादल एवं वसंत ऋतु से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तरः इन पंक्तियों में कवयित्री हमें यह संदेश देना चाहती हैं कि इन्सान के जीवन में सुख और दुख दोनों को समान स्थान मिलना चाहिए । नीले आसमान की सुंदरता उसमें घुल मिल जानेवाले

Scanned with CamScanner

बादलों की वजह से ही है । चंचल बादल दिखते भी हैं, बरसते हैं और गायब भी हो जाते हैं। इसी प्रकार इन्सान के जीवन रूपी आसमान में कष्ट और दुख आते भी हैं और धीमी भी पड़ जाते हैं । संपूर्ण समाप्त भी होते हैं ।

ऋतुओं में राजा माने जानेवाला वसंत भी अपनी आभा(शोभा) दिखाकर आनेवाली ऋतुओं के लिए अपना स्थान छोड़कर जाता है । यही प्रकृति का नियम है। इसी प्रकार मनुष्य को भी अपना कर्तव्य निभाकर दूसरों के लिए स्थान–मान छोड़कर मिटना चाहिए । मनुष्य के इस गुण में ही उसके जीवन की सार्थकता है ।

३. जीवन की सार्थकता किसमें है?

उत्तर: इन पंक्तियों में कवयित्री ने आँसुओं को मोती के समान माना है । वे कहती हैं कि आँखों की सुंदरता तभी बनती है जब वे सुख और दुःख के वास्ते आँसू बहाती हैं। मनुष्य के जीवन में सुख दुःख एक ही सिक्के के दो पहलू जैसे हैं । वह जीवन ही क्या जिसमें सिर्फ सुख ही सुख है । वह जीवन ही क्या जो हमेशा दुःख ही झेलता है । मनुष्य के जीवन की सार्थकता तभी बनती है जब वह सुख और दुःख, कष्ट और पीड़ा दोनों को समान रूप से स्वीकार करता है ।

४. कवयित्री अमरों के लोक को क्यों ठुकरा देती हैं?

उत्तर: कवयित्री ऐसे अमर लोक अथवा स्वर्ग को भी ठुकराना चाहती हैं जिसमें वेदना नहीं है, जिसमें नाश नहीं है, जिसमें जलन नहीं है । और नाही जिसने मिटने का स्वाद जाना है । अपनी धरती के आगे कवयित्री ऐसे सौ–सौ स्वर्ग न्योछावर करने को तैयार है । कवयित्री अपनी इस सुंदर धरती में ही हज़ारों कष्ट, यातना, पीड़ा और विरह झेलते हुए जीने को तैयार हैं ।

परमात्मा की करुणा अथवा कृपा से कवयित्री को अमर लोक का उपहार भी स्वीकार्य नहीं। उन्हें भगवान की तरफ से सिर्फ एक आशीर्वाद चाहिए । और वह है इस धरती में ही मरने और मिटने का अधिकार । वे भगवान से प्रार्थना करती हैं कि इस अधिकार को उनसे कोई न छीने।

५. अधिकार कविता में प्रयुक्त प्राकृतिक तत्वों के बारे में लिखिए ।

उत्तर: बौद्ध दर्शन के दुखवाद से प्रभावित महादेवी वर्मा के संपूर्ण काव्याभिव्यक्तियों में वेदना एंव करुणा का स्वर प्रधान रूप से मुखरित हुआ है । आपने वेदना का स्वागत करते हुए कहा है कि जिस लोक में अवसाद नहीं, वेदना नहीं, ऐसे लोक को लेकर क्या होगा? जीवन की सार्थकता परिस्थितियों से डट कर मुकाबला करने में है न कि पलायन करने में । फूल, तारे, बादल, वसंत आदि प्रकृति से अनेक बिंबों का प्रयोग करके कवयित्री ने जीवन के प्रति गहरी आस्था व्यक्त की है । कवयित्री को वेदना का वह रूप प्रिय है जो मनुष्य के संवेदनशील हृदय को समस्त संसार से बाँध देता है । वे अमरों के लोक को भी ठुकराकर अपने मिटने के अधिकार को बचाये रखना चाहती हैं । जीवन में वेदना की अनुभूति का महत्व तथा संघर्ष पथ पर निरंतर आगे बढ़ने का संदेश देती हैं ।

Scanned with CamScanner

III.ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए।

१. *ऐसा तेरा लोक, वेदना,*

नहीं, नहीं जिसमें अवसाद,

जलना जाना नहीं, नहीं–

जिसने जाना मिटने का स्वाद!

संदर्भ– कविता का नाम – अधिकार

कवयित्री का नाम– महादेवी वर्मा

विवरण: कवयित्री ऐसे अमर लोक अथवा स्वर्ग को भी ठुकराना चाहती हैं जिसमें वेदना नहीं है, जिसमें नाश नहीं है, जिसमें जलन नहीं है और नाही जिसने मिटने का स्वाद जाना है । अपनी धरती के आगे कवयित्री ऐसे सौ–सौ स्वर्ग न्योछावर करने को तैयार है । कवयित्री अपनी इस सुंदर धरती में ही हज़ारों कष्ट, यातना, पीड़ा और विरह झेलते हुए जीने को तैयार हैं ।

विशेषता: कवयित्री कहती हैं कि उसे दूसरे अन्य लोक की ज़रूरत नहीं है । इस लोक में ही सुख –दुःख के साथ अपना अधिकार बचाये रखना चाहती हैं ।

Scanned with CamScanner